बुन्देली लोक साहित्य में

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

डॉ0 कैलाश बिहारी द्विवेदी

Scanned with OKEN Scanner

ISBN 81-86294-29-5

मूल्य : दो सौ रुपये मात्र

संस्करण : प्रथम, 2005

प्रकाशक :

सत्येन्द्र प्रकाशन

30, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद-211006

शब्द संयोजक : प्रयागराज कम्प्यूटर्स

13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद

मुद्रक : श्री मारुती प्रिंटर्स

56/13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद

Bundeli Kahavaten Aur Muhavare — Dr. Kailash Bihari Dwivedi

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

बुन्देली लोक साहित्य में कहावतें और मुहावरे	—	11-26
बुन्देली कहावतें	—	27-174
परिनिष्ठित साहित्य की कुछ लोकोक्तिवत् पंक्तियाँ	—	175-176
बुन्देली मुहावरे	—	177-201
शब्दार्थ	—	203-207

सूचना—

बुन्देली में अं, ङ, ञ, ण, य, व, श और ष से प्रारम्भ होने वाली लोकोक्तियाँ और मुहावरे प्राप्त नहीं हैं।

ङ, ञ, ण से प्रारम्भ होने वाले शब्द परिनिष्ठित हिन्दी में भी नहीं होते हैं। अतएव बुन्देली में न होना स्वाभाविक है।

बुन्देली में 'य' का 'ज', 'व' का 'ब' तथा तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' का दन्त्य 'स' हो जाता है।

'अं' और 'ढ' वर्णों का प्रयोग तो बुन्देली में होता है। इनसे प्रारम्भ होने वाली कोई लोकोक्ति या मुहावरा शायद हो, परन्तु उपलब्ध नहीं हुए।

□□□

Scanned with OKEN Scanner

बुन्देली लोक साहित्य में

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

सत्येन्द्र प्रकाशन
इलाहाबाद

Scanned with OKEN Scanner